मेघदूत के आधार पर रामगिरि से अलकापुरी तक के मार्ग का संक्षिप्त वर्णन करें।

मेघदूत संस्कृत साहित्य का वह जाज्वल्यमान हीरक है जिसकी प्रभा समय के प्रवाह से और भी अधिक बढ़ती जाती है। बाह्य प्रकृति की मनोरम झाँकी प्रस्तुत करने में तथा अन्तस्तल में सन्तत उदय लेने वाले भावों के चित्रण में यह काव्य अपनी तुलना नहीं रखता। किसी विरह-विधुरा प्रेयसी के पास मेघ को प्रेम का संदेश वाहक दूत बनाकर भेजने की कल्पना ही विश्व के साहित्य में अपूर्व कोमल तथा हृदयाकर्षक है। किसी अचेतन वस्तु को प्रेम-प्रसंग में दौत्य-कर्म के लिए भेजना तथा प्रणय में गाढ़ उत्कण्ठातिरेक की सद्यः अभिव्यक्ति करना सचमुच एक प्रतिभासम्पन्न कवि की मौलिक कल्पना है।

रावण के भाई कुबेर से अभिशप्त होकर तरुण यक्ष रामगिरि पर्वत पर आश्रय ग्रहण करता है। सावन के आ जाने पर वह अपनी कान्ता के जीवन की रक्षा की कामना से उसे सन्देश द्वारा सान्त्वना देना चाहता है। उसकी प्रिया सुदूर हिमालय क्षेत्र में स्थित अलका में है। अलका की छटा का क्या कहना। यह स्वर्ग के एक देदीप्यमान खण्ड के समान लावण्यपूरित है। ऐसी स्वर्गीय अलका की अवस्थिति मानसरोवर के निकट कैलास पर है। यक्ष स्पष्ट संकेत देता हुआ कहता है कि अलका नगरी के बाहरी भाग में एक उपवन है, जिसमें शिव का मन्दिर है। इस मंदिर में भगवान् शिव की अनुपम प्रतिमा है। शिव के सिर में संलग्न चन्द्रमा की चन्द्रिका से अलका के प्रासाद धवलित होकर अपूर्व शोभा उत्पन्न कर रहे हैं। कवि मेघ के मार्ग-पथ के सौन्दर्य का वर्णन अपनी निसर्ग सुन्दर प्रतिभा से करता है।

यक्ष जिसके द्वारा दूत का कार्य सम्पन्न कराना चाहता है वह धुएँ, प्रकाश, जल और पवन का समूह रूप मेघ है। मेघ को रामगिरि से अलका जाना है। मेघ स्थल-बेतों वाले स्थान से उड़ान भरेगा, उस समय वह पर्वत खण्ड के समान दिखाई पड़ेगा। स्थल-बेतों वाली जगह से चलकर ग्राम-युवतियों की आँखों का अतिथि होता हुआ वह 'माल' नामक पर्वत पर

आरोहण कर पुनः कुछ पश्चिम की ओर चल देगा :-

"त्वय्यायत्तं कृषिफलमिति भ्रूविलासानभिज्ञैः
प्रीतिस्निग्धैर्जनपदवधूलोचनैः पीयमानः ।
सद्यः सीरोत्कषणसुरभि क्षेत्रमारुह्य मालं
किञ्चित्पश्चाद् व्रज लघुगतिर्भूय एवोत्तरेण ॥"

मालप्रदेश से वह आगे बढ़ेगा तो उसे उन्नत शिखरोंवाले 'आम्रकूट' का आतिथ्य स्वीकार करना पड़ेगा । वनचरों की स्त्रियों द्वारा प्रणय सुख भोगे गए निकुञ्जों वाले उस आम्रकूट पर्वत पर क्षणभर रुककर, मेघ जल बरसाने के कारण शीघ्र चलता हुआ उससे आगे का मार्ग पार कर 'नर्मदा' नदी को देखेगा जो विन्ध्याचल की पर्वतों से उबड़-खाबड़ तलहटी में बिखरी जैसी मालूम होती है, और हाथी के मस्तक पर चित्रकारी के समान लगती है -

स्थित्वा तस्मिन् वनचरवधूभुक्तकुञ्जे मुहूर्तं
तोयोत्सर्गद्रुततरगतिस्तत्परं वर्त्म तीर्णः ।
रेवां द्रक्ष्यस्युपलविषमे विन्ध्यपादे विशीर्णां
भक्तिच्छेदैरिव विरचितां भूतिमङ्गे गजस्य ॥

पुनः यक्ष संभावना व्यक्त करते हुए कहता है कि द्रुत गति से जाने पर भी मेघ को कुटज के फूलों से सुगन्धित अनेकों पर्वतों पर ठहरना पड़ेगा । अतः विरही यक्ष का अनुनय निवेदन है कि जब सजल नयन मयूर अपनी सुन्दर ध्वनि से उसका अभिनन्दन कर लौट जाएँ तो वह आगे की यात्रा के लिए तत्पर हो जाए । यहाँ से वह दशार्ण पहुँचेगा । यक्ष की धारणा है कि मेघ के दशार्ण प्रदेश में पहुँचते ही उद्यानों में केतकी के फूल भर जाएँगे, गाँव की गलियाँ के पवित्र वृक्ष कौए आदि पक्षियों के घोंसलों के निर्माण से पूरित होंगे, जामुन के जंगलों के पार्श्व भाग पके फलों से काला हो जाएगा ।

दशार्ण देश की दिशा में मेघ को 'विदिशा' नाम से सुविख्यात राजधानी मिलेगी । इस विदिशा में उसे विलासिता का सम्पूर्ण साधन प्राप्त होगा । विदिशा में विश्राम करने के लिए मेघ 'नीचैः,

नामक पर्वत पर आश्रय लेगा। यहाँ उसे विलास और विश्राम के सभी अवसर प्राप्त होंगे। इस पर्वत पर जो कि पूर्ण विकसित कदम्ब के पुष्पों के साथ मेघ के संसर्ग के कारण रोमांचित हुआ सा लगेगा तथा वेश्याओं की रतिक्रीड़ाओं में प्रयुक्त सुगन्ध को उगलने वाली पर्वत की गुफाओं द्वारा नगरवासियों के उभरे हुए यौवन का संकेत देगा —

"नीचैराख्यं गिरिमधिवसेस्तत्र विश्रामहेतो-
स्त्वत्सम्पर्कात् पुलकितमिव प्रौढपुष्पैः कदम्बैः।
यः पण्यस्त्रीरतिपरिमलोद्गारिभिर्नागराणा-
मुद्दामानि प्रथयति शिलावेश्मभिर्यौवनानि॥"

विश्राम के बाद मेघ पहाड़ी नदियों के तटों पर पुष्पित जुही की कलियों को सींचता हुआ, फूल चुननेवाली क्लान्त युवतियों को छायादान कर आगे बढ़ जायगा।

आगे का मार्ग उत्तर दिशा की ओर जाने की दृष्टि से टेढ़ा पड़ेगा लेकिन यक्ष का आग्रह है कि उसे 'उज्जयिनी' से होकर जाना होगा क्योंकि वहाँ न जाने से उज्जयिनी के प्रासादों पर बिजली की चमक से डरी नगर युवतियों के चितवन के विलास के आनन्द से वह वंचित हो जायगा। उज्जयिनी की ओर जाते हुए मेघ को बीच में प्रथमतः 'निर्विन्ध्या' तथा तत्पश्चात् 'सिन्धु' नदी मिलेगी। इस प्रकार सिन्धु नदी को पारकर मेघ उस 'अवन्ती' में आयगा, जहाँ गाँवों के वृद्ध पुरुष उदयन और वासवदत्ता की प्रणय गाथा में रुचि लेते हैं। इसके बाद वह 'उज्जयिनी' जायगा जो स्वर्ग के एक उज्ज्वल खण्ड के समान है —

प्राप्यावन्तीनुदयन कथा कोविदग्रामवृद्धा-
न्पूर्वोद्दिष्टामनुसर पुरीं श्रीविशालां विशालाम्।
स्वल्पीभूते सुचरितफले स्वर्गिणां गां गतानां
शेषैः पुण्यैर्हृतमिव दिवः कान्तिमत्खण्डमेकम्॥

तत्पश्चात् वह 'देवगिरि' की ओर अग्रसर होगा। इस पर्वत पर कार्तिकेय का मन्दिर है। पुष्पमेघ बनकर वह आकाशगंगा के जल से कार्तिकेय को नहलाएगा। इसके बाद वह अपने गर्जन से स्वामी कार्तिकेय की आराधना कर देवगिरि से उतरकर सिद्ध-दम्पत्तियों के रास्ता छोड़ देने पर मेघ रन्तिदेव की 'चर्मण्वती' नदी के प्रति सम्मान प्रदर्शित करेगा। इस 'चर्मण्वती' को पारकर मेघ दशपुर जाएगा। तत्पश्चात् वह 'ब्रह्मावर्त' नामक देश में छाया द्वारा प्रवेश करेगा और तब 'कुरुक्षेत्र' जाएगा, जहाँ गाण्डीवधन्वा अर्जुन ने राजाओं पर अनगिनत बाणों की वर्षा की थी।

कुरुक्षेत्र से चलकर मेघ 'कनखल' पहुँचेगा। कनखल के समीप हिमालय से उतरी सगरपुत्रों के लिए स्वर्ग की सीढ़ी रूप 'जाह्नवी' मिलेगी। इसके बाद वह हिम से श्वेत पर्वत हिमालय पर पहुँचेगा। हिमालय की ढलानों को पारकर मेघ परशुराम यश के मार्ग एवं मानसरोवर जाने के लिए हंसों के द्वाररूप क्रौञ्च पर्वत के छिद्र से निकलकर उत्तर की ओर बढ़ेगा।

ऊपर जाकर मेघ उस कैलास का अतिथि होगा, जिसकी चोटियों के जोड़ों को रावण की भुजाओं ने ढीला कर दिया था, जो देवाङ्गनाओं का दर्पण है और जो शिवजी के राशिभूत अट्टहास के सदृश है। फिर मेघ कमल भरे मानसरोवर का जल ग्रहण कर ऐरावत को मुँह ढकने का वस्त्र देकर और कल्पद्रुम के किसलयों को लहराते हुए स्वेच्छया कैलास का आनन्द लूटेगा। कामचारी मेघ को यहाँ अलका की जानकारी हो जाएगी। यह अलका उस कैलास की गोद में ही है —

तस्योत्सङ्गे प्रणयिन इव स्रोतङ्गागादुकूलां
न त्वं दृष्ट्वा न पुनरलकां ज्ञास्यसे कामचारिन्।
या वः काले वहति सलिलोद्गारमुच्चैर्विमाना
मुक्ताजालग्रथितमलकं कामिनीवाभ्रवृन्दम्॥

कैलास के मध्य अलका उसी प्रकार विराजती है जैसे प्रणयी की गोद में निर्वसना नायिका। अलका सात मंजिल भवनों से युक्त है और उसी प्रकार बरसते हुए मेघ-समूह को

धारण करती है जिस प्रकार आकर्षित कामिनी मोती के दानों से गुंथे हुए बालों को धारण करती है।

इस प्रकार रामगिरि से अलकापुरी तक के भागों व स्थानों का कवि ने अत्यन्त मनोरम वर्णन कर सहृदय पाठकों का हृदय जीत लिया है।